अंक : १ (१)
वर्ष : २०१५

भाकृअनुप
ICAR

धान
DHAAN

धान की उन्नति : देश की प्रगति

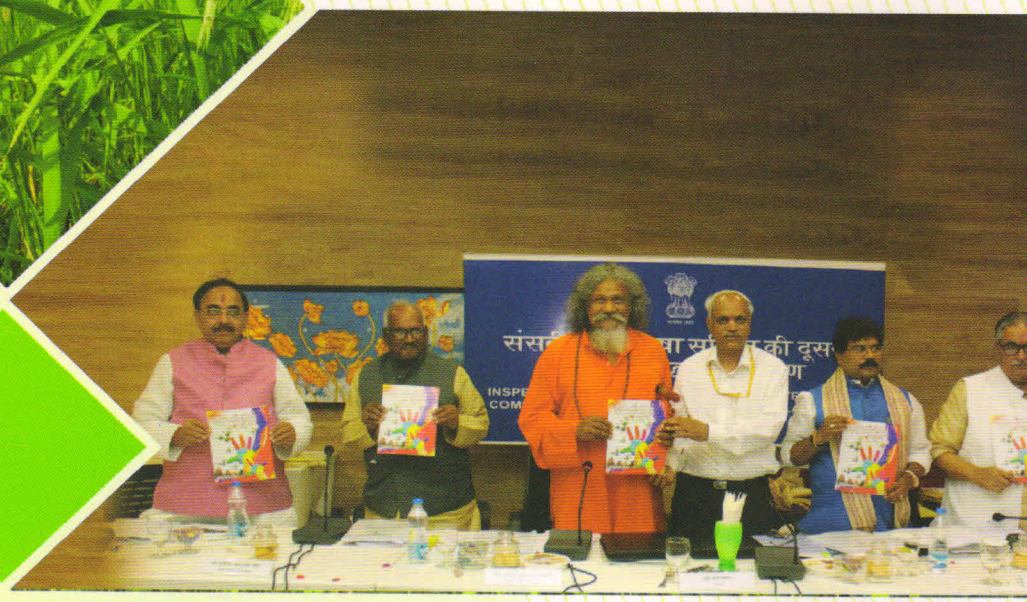

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा राजभाषा कार्यक्रम निरीक्षण

भाकृअनुप-केंद्रीय चावल अनुसंधान संस्थान
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
ICAR - Central Rice Research Institute
Indian Council of Agricultural Research

अजोला : एक अनोखा फर्न

अजोला फर्न वर्ग का एक जलीय पौधा है, जिसका उपयोग निम्नलिखित उदेश्यो के लिए होता है।

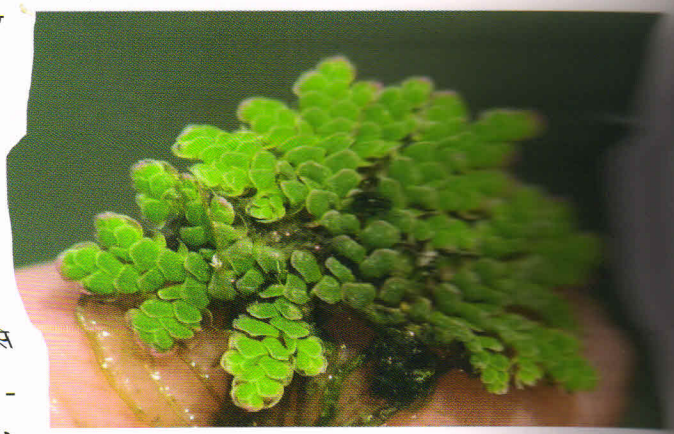

i *अजोला धान की फसल में एक उपयोगी नाइट्रोजन स्थिरीकरण* करने वाला जैव-उर्वरक है। इस पौधे के अंदर साइनोबैक्टोरिया रहता है जो कि वायुमंडलीय नाइट्रोजन को आमोनिया में परिवर्तित कर देता है और यह आमोनिया धान के पौधे के लिए उपलब्ध नाइट्रोजन का काम करता है जिससे धान की फसलों मे तेजी से विकास होता है। अजोला की एक फसल से प्रति हेक्टयर १०-२० टन ताजा जैवपदार्थ का उत्पादन होता है जिससे २० से ४० किलोग्राम नाइट्रोजन प्राप्त होता है। इससे लगभग ३०किलोग्राम नाइट्रोजन की दर से रासायनिक उर्वरक की बचत होती है। अजोला के प्रयोग के द्वारा धान की उपज में प्रति हेक्टेयर १-२ टन की वृद्धि होती है तथा यह सभी अवधिवाली धान की किस्मों के लिए उपर्युक्त है।

ii शुष्क वजन के आधार पर अजोला में १५-२५% प्रोटीन होती है तथा इसे मछली, बत्तख, मुर्गी, सुअर, तथा अन्य पशुओं के लिए अतिरिक्त खाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है।

iii अजोला पोटेशियम का एक प्रभावशाली अपमार्जक है तथा पोटेशियम की अभाव वाली मिट्टी में इसका प्रयोग करने से धान की फसल को लाभ होता है।

iv अजोला भारी-धातुओ (जैसे सीसा, पारा इत्यादि) तथा रेडियो धर्मी पदार्थ एवं अन्य कई प्रदूषणों के जहर को खत्म करने में सहायता प्रदान करता है।

v फल एवं सब्जियों की खेती के लिए अजोला को एक कपोस्ट के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है।

vi बायोगैस के उत्पादन के लिए भी गोबर के साथ अजोला का प्रयोग किया जा सकता है।

vii इसका एक नाम मच्छर-फर्न भी है क्योंकि यह जल की सतह पर उग करके मच्छर के अंड़ो को उपयुक्त ऑक्सीजन नहीं पहुचने देता जिससे मच्छरों का सर्वनाश हो जाता है। अत: यह मच्छर विनाशक के रूप में भविष्य में उपयोग किया जा सकता है।

डॉ उपेन्द्र कुमार

युवक और युवतियों अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषा; खूब पढ़ें और जरूर पढ़ो लेकिन उनसे मैं आशा करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसाद भारत को और सारे संसार को उसी तरह प्रदान करेंगे जैसे बोस, राय ओर स्वयं कवि रवींद्रनाथ ने प्रदान किया है । मगर मैं हरगिज यह नही चाहुंगा कि कोई भी हिंदुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊंचे से ऊंचा चिंतन नहीं कर सकता । राष्ट्रभाषा की जगह एक हिंदी ही ले सकती है, कोई दूसरी भाषा नहीं।

महात्मा गांधी